

"

" ..

"

"

.....
.....
.....
.....

..

.....
.....
.....
.....
.....

..

.

"

"

*

.

..

↳

.

/

.

|

|

|

|

.

•

		-
	"	-
	"	-
		-
		-

		-
		-

٥

" : " :

"

() ()

()

: () :

:

.

) :

() (

.

() " :

" :

:

:

"

-

" : -

()

() / 1

/

1 شرح الرضي عن الكافية ١٢٩/٣، ١٣٠ .

2 شرح الرضي عن الكافية ١٢٩/٣، ١٣٠ .

/ (:) / 3

. / : 4

. / (:) / 5

. / (:) / 6

() :

()

(:)

() ()
()

لأبن هشام ١٢٤/١ : 1

/ / : 2

/ / : 3

" : / / : 4

: " :

-:

."

.

-

()

)

.(

()

:

:

:

"

."

:

":

:

"

":

":

"

:

...

()

()

. :

()

/ (:)

/ 1

2 سيوية، كتاب سيوية، تحقيق عبد السلام محمد هارون، عالم الكتب، ط٣، ج١، ص: ٤١٩.

3 المرجع السابق.

4 المرجع السابق، ص (٤١٩ - ٤٢٠)

" :
 ... :
 :
 " ...
 :
 ()
 -
 " : ()
 " { }
 .
 3 () () ()
 : : " :
 " " " "
 ()
 :
 ()
 " () () ()
 " "

¹ المرجع السابق، ص: ٤٢٠.
² المبرّد، المقتضب ما تحقّق: محمد عبد الخالق عضيمية، عالم الكتب، بيروت، ج٤، ص: ١٣٦.
³ المرجع السابق، ص: ١٤٣.
⁴ المرجع السابق، ص: ٢٤.
⁵ المرجع السابق، ج٣: ص ٢٢٧، دج ٤: ٢٨٩.
⁶ المرجع السابق، د ٣، ص ٢٢٧.
⁷ المرجع السابق، ج٤، ص: ٤٤.
⁸ المرجع السابق، ج٢، ص: ١٧٨.

()

: ()

:

":

" ":

" ()

":

: ...

:

()

()

: ()

"

()

()

: ":

()

4n

:

":

:

:

-

:

-

()

()

¹ المرجع السابق، ج ٤، ص: (١٤٨ - ١٤٩)
² المرجع السابق، ص: ١٥٨.
³ المرجع السابق، ص: ١٦١.
⁴ المرجع السابق.
⁵ المرجع السابق، ص: (١٤٦، ٢٦٥، ٢٨٣).

: :
 : .
 : -
 : ()
 () ()
 " " " :
 :
 (:) " :
 " :
 () -
 " : " : () -
 () : -
 : () () () -
 :
 :
 " : :
 " :
 : -
 : :
 : .. :
 : :

¹ المرجع السابق، ج٣، ص:١٧٧.
² المرجع السابق، ص (٢٢٣ - ٢٢٤).
³ المرجع السابق، ج٤، ص ٢٤٤.
⁴ المرجع السابق، ج٢/ص (١٧٥ - ١٧٦)

"

:

()

()

:

-

.

()

:

--

.... " : -()

.

:

:

:

()

:

:

:

()

:

¹ ديوان ذي الرمة شرح أحمد بن حاتم الباهلي. تحقيق عبد القدوس أبو صالح ط١، (البيروت: مؤسسة الإيمان، ١٩٨٢)،

2 : () () :

/ (

/ / :

/ :

() " " :
 :
 " " :
 " " :
 " " " " :
 " " ()
 :
) : ()
 .()
 .()
 () ()
 : ()
 " :
 " " " :
 " " " :
 " " " " " "

¹ المرجع السابق، ص ٢١١.
² الخرقاء: امرأة كانت لا تعتني بغزلها إلا إذا طلع سهيل.

:

:

:

()

:

"

(/)

"

:

-

:

-

:

-

:

"

"

)

(

()

¹ تشومسكي، ١٩٩٣، ص ١٠، ١١.
² النظرية النموذجية الموسعة: ص ١٠.
³ النظرية النموذجية الموسعة: ص ١١.

() :

()

:

() . + () . ←

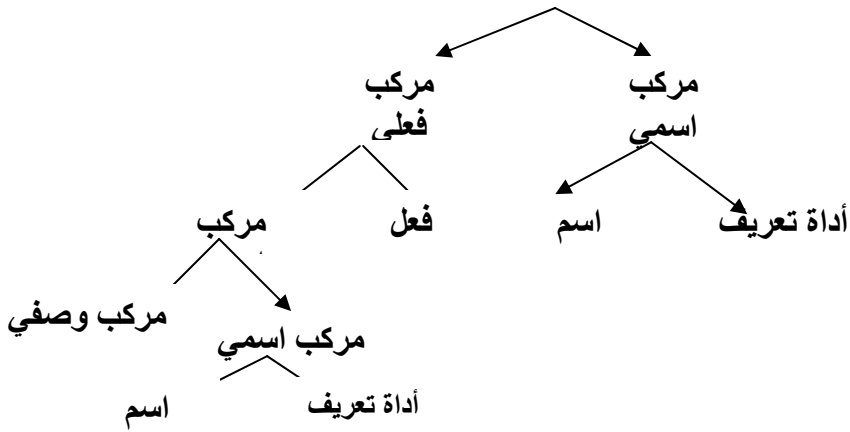
:

+

+

+

() +



()

: ()

:

-

-

¹ تشكوميكي، جوانب من نظرية النحو، ص ٣٧.
² المرجع السابق.

:

:

:

[

-

-

]

:

-

. [] :

:

-

:

[

]

:

-

[] :

. [] :

-

-

:

-

..

" "

()

" "

..

" "

() ()

" "

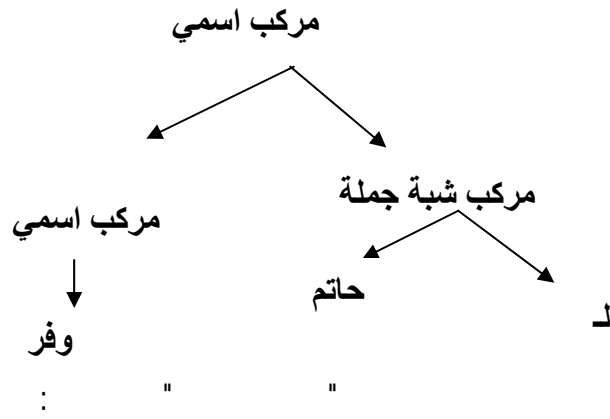
..

¹ جون ليونز، نظرية تشومسكي النحوية، ترجمة وتعليق حلمي خليل، الطبعة الأولى ١٩٨٥، دار المعرفة الجامعية – الإسكندرية، ص ١١٣.

() () ()

" "

:



()

()

()

:

()

¹ د. محمود سليمان ياقوت " بدون تاريخ" المبني للمجهول في الدرس النحوي والتطبيق في القرآن، دار المعرفة الجامعية - الإسكندرية، ص ٥٧.

...

:

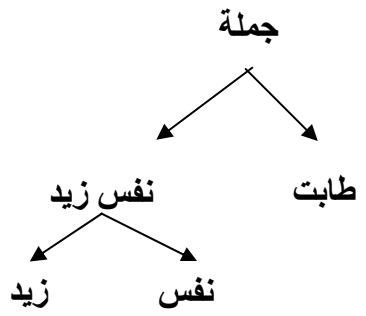
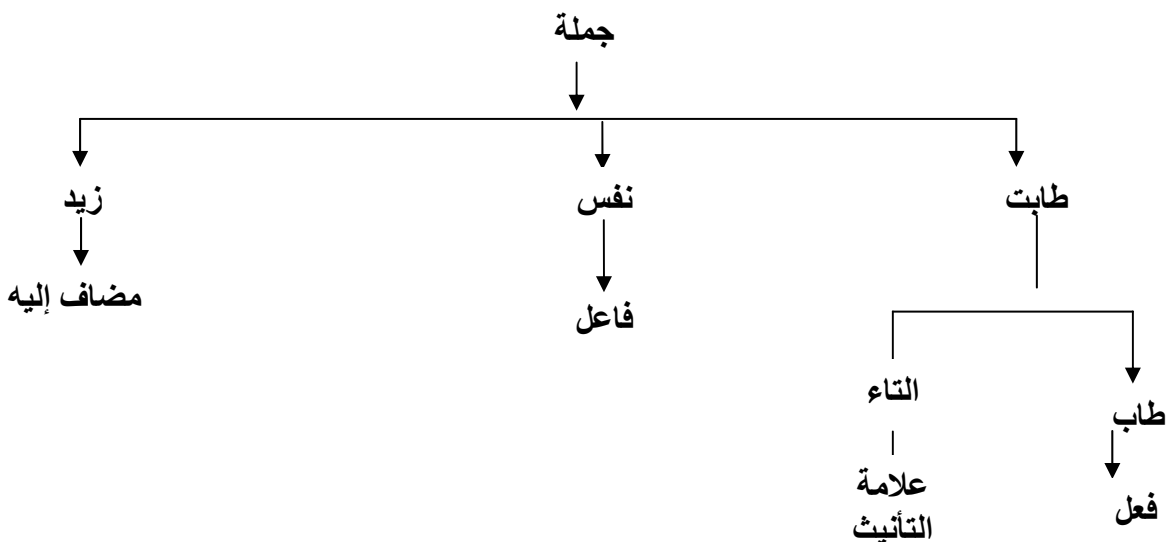
" "

" "

" :

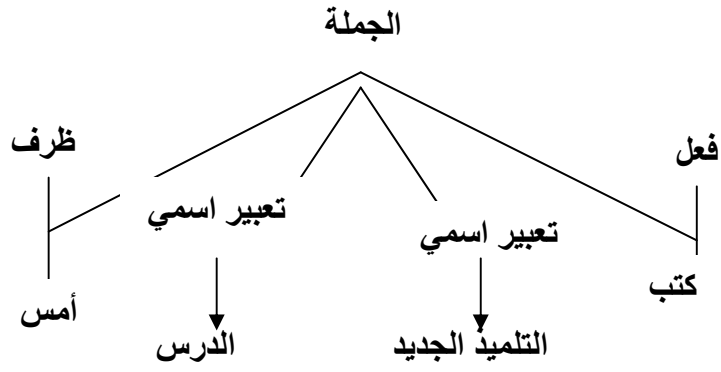
" "

()



()

" "



()

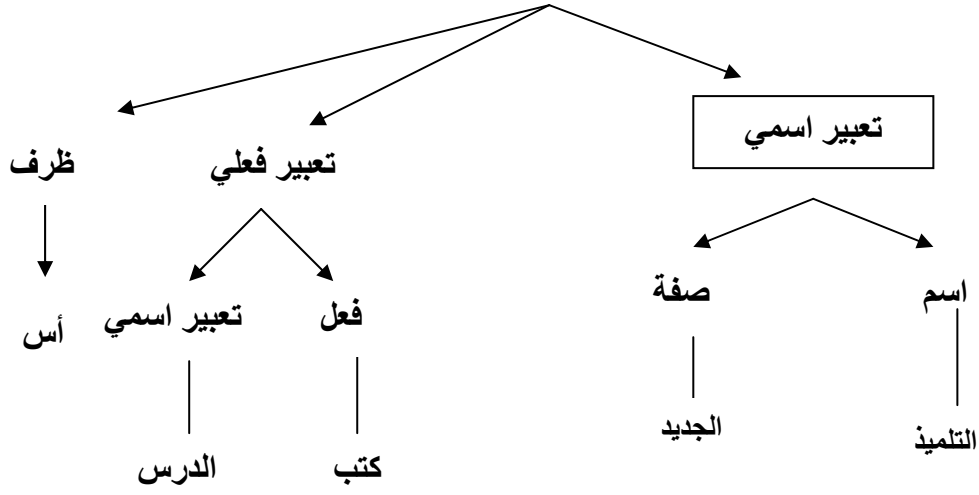
" " " "

()

..... :

:()

¹ الرشيد أبو بكر " استخدام التحولات النحوية في دراسة اللغة العربية، " المجلة العربية للدراسات اللغوية، السنة الأولى العدد الأول، أغسطس ١٩٨٢م (٦٥ - ٩٠) ص ٩٨، ص ٧٧.



()

()

()

"

"

.

"

"

"

"

"

..

:

..

.

.

.

..

..... (" " +) ←

.

:

..... + + ←
() ()

:

+ + ←
()

:

: ()
()
() ()

:

."

":

"

-

"

"

*

:

:

+

()

:

+ + ←

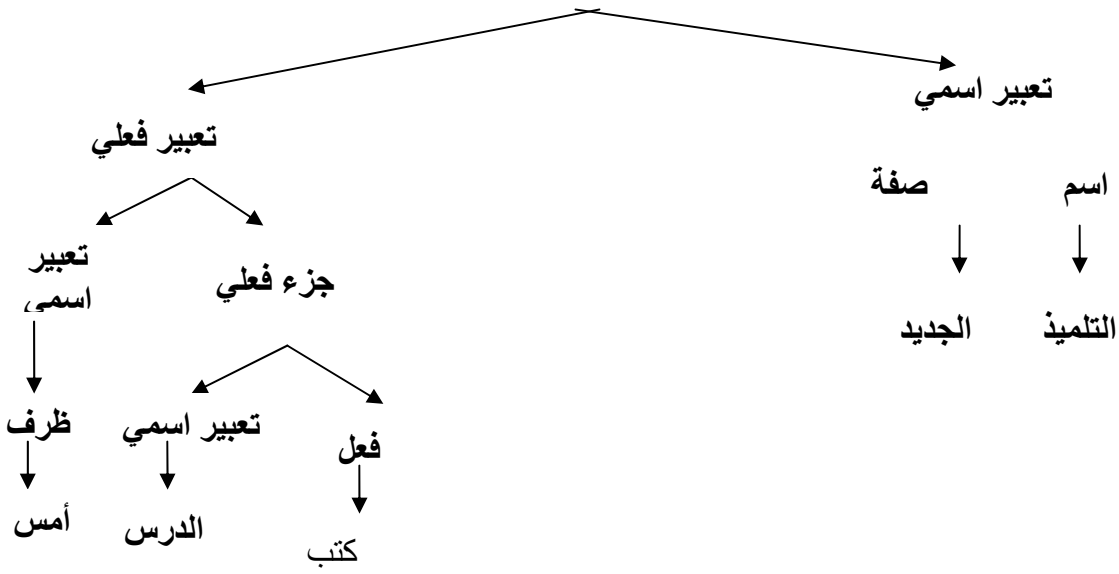
:

:

() ←

:

() + + ←



()

:

+ ()

←

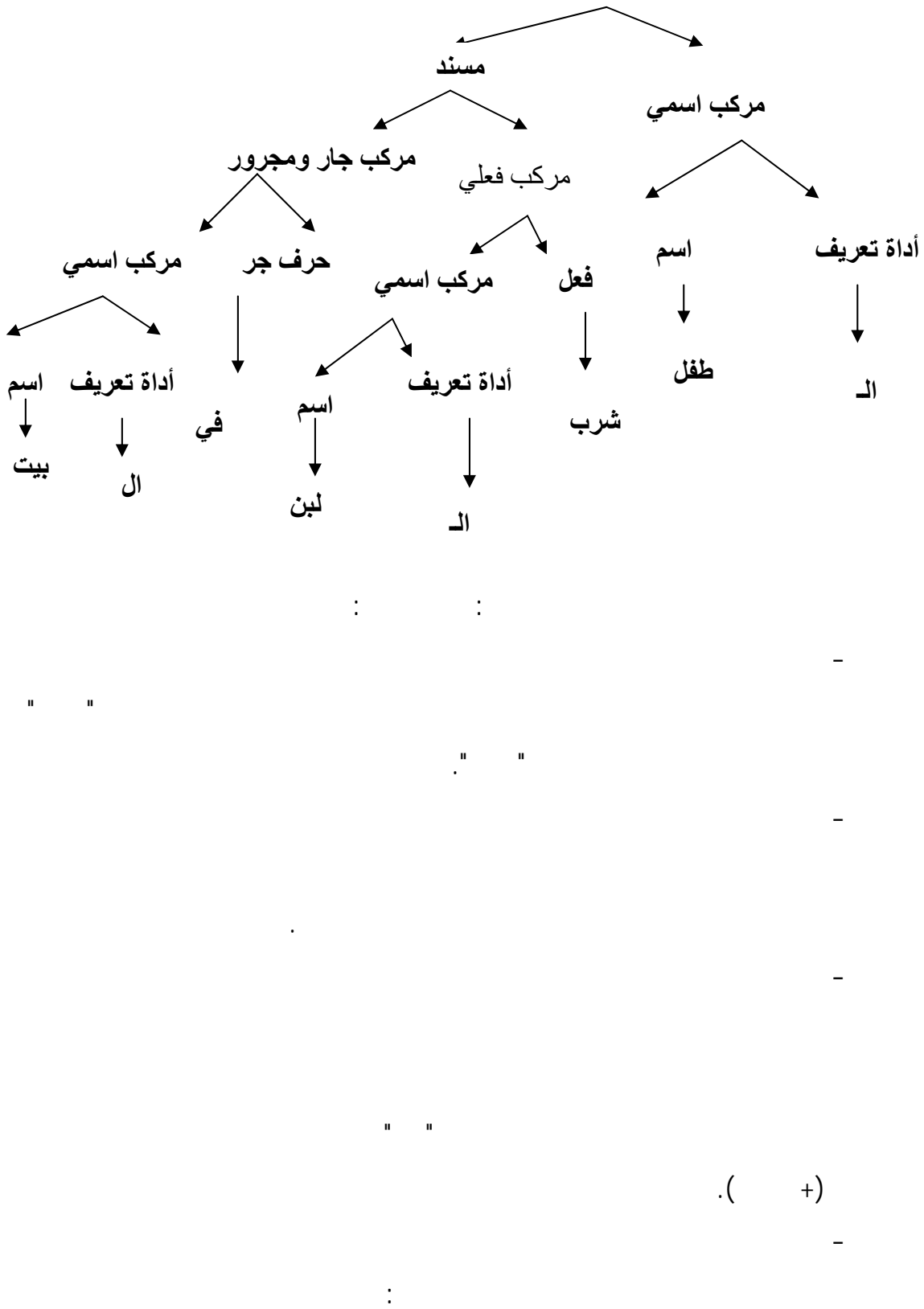
":

-

-

¹ مرجع سابق، ص ٤٦.





:

" " " "

-

:"

"

" "

:

."

"

/

:

"

":

)

" "

."

" "

"

:

" " " "

-

-

-

.() : -
 () : -
 () : -
) : -
 :

" " "Lakoff & Ross"
 ()
 : ()"LAKOFF" (Semantics)
 "

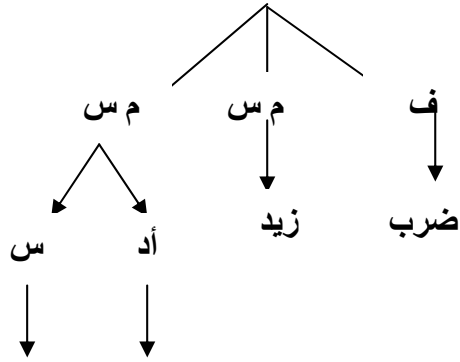
(Constant Derivational)

"
 " "
 (Simonies Syntax)
 "

(The autonomy of syntax)

←
 ← ←
 () ←

: ()



"

"

(.....)

:
 :) :
 :
 .
 .
 .

(Subject Inversion)

:

An old man stand in the dark corner
 In the dark corner stood an old man

:

:

-

-

-

-

()

:

"

":

:

"

":

:

*

:

١ الفهري، ص: ٨٠ - ٨١.

٢ الفهري، ص ٧٥.

* وهذا يعني أن الجملة الفعلية هي الأصل، والجملة الاسمية فرع لها.

:

:

" " " "

()

:

:

.({)

()

:

:

¹ اللسانيات واللغة العربية، ص ١٢٤،

² المرجع السابق، ص ١٢٧.

³ اللسانيات واللغة العربية، ص ١٣٠ - ١٣١.

⁴ انظر ما قدمه الفهري من دراسة للإشتغال، تفكيك أم تبئير؟ في اللسانيات واللغة العربية (ص ١٤١ - ١٩٤).

⁵ المرجع السابق ص ١٢٩.

/

-

:

:

:

" "

()

(

*

()

()

(antecedent)

:

* البنية الحملية، عنده، هي الأركان الأساسية، وهي هنا الفعل والاسم الذي ينتمي إليه، سواء أكان الفعل تاماً أم ناقصاً.
1 اللسانيات واللغة العربية، (ص ٢٠٠ - ٢٠١)

()

() ()

*

.

.

.

:

:

" " " " " "

:

:

* المقصود بالمراقب: الاسم الذي يعود عليه الضمير في اسم الفاعل (راكباً).

¹ المرجع السابق، ص ٢٠٢.² اللسانيات واللغة العربية، ص ٢٠٢.³ انظر في كيفية صياغة البنية الوظيفية للجمل التي تتضمن أحد النوعين من الفضلات: اللسانيات واللغة العربية. ص ٢٠٥، وما بعدها.

(" " " ")

(Complementizer phrase)

strict)

(locality

(sub categorization)

¹ أنظر في تفصيل هذا الجانب: عبد القادر الفاسي بالفهري، الدلالة النظرية لبعض الظواهر الاحالية في اللغة العربية، ضمن اشغال ندوة اللسانيات في خدمة اللغة العربية، تونس ٢٣ - ٢٨، نوفمبر ١٩٨١، مركز الدراسات والأبحاث الاقتصادية، تونس ١٩٨٣م، ص ٣٧٥ - ٣٩٠.

² الفهري، اللسانيات الظواهر وباب التعليق، ص ٣٥ - ٣٦.

³ اللسانيات الظواهر وباب التعليق، ص ٣٥ - ٣٦.

⁴ انظر اللسانيات واللغة العربية ن ص ٢٣٨.

" " " " " "

:

" "

)

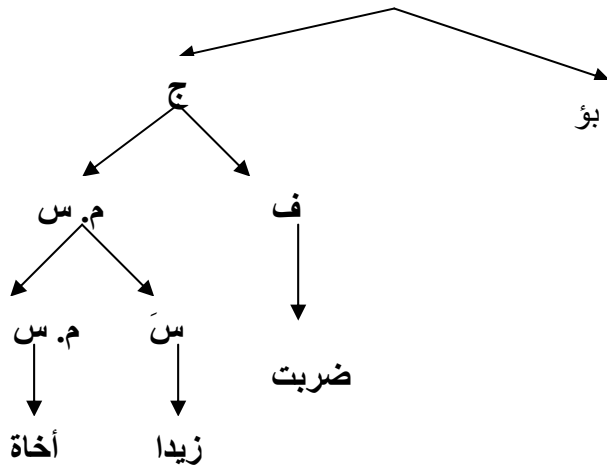
() (

:

:

(.) ← .

" "



:

()

¹ المرجع لاسابق، ص ٢٤١.

² انظر في تفصيل هذا الافتراض من خلال كتاب (اللسانيات واللغة العربية، ص ١٤٦)

() ()
(: / : / : / :) :
()

)
(
: (.)

() ()

.()

:

:

:

:

.
:

:

. :
.

:

. :
.

:

. :
.

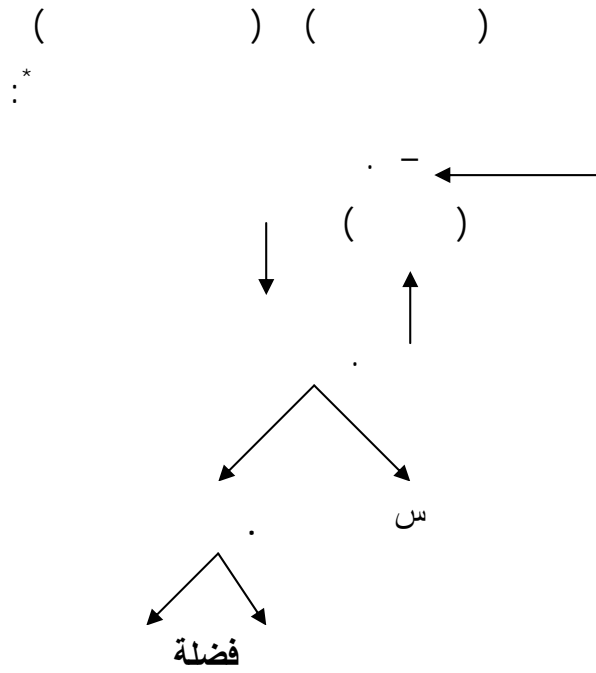
:

:

:

. :
.

:



()

(.)

:

:

()

:

(/)

"

* قاعدة إعادة الكتابة تعني أن نكتب العنصر اللغوي على يمين السهم وأن نكتب العناصر التي يتكون فيها على يسار السهم، وهذا يساعد على إعادة كتابة كل عنصر على يسار السهم بالطريقة نفسها.

()

()

.()

()

:
(. .)

: (. .)

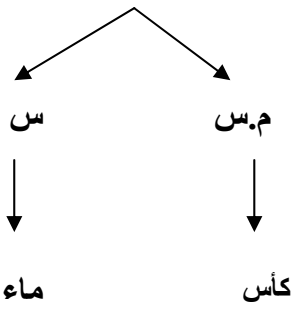
:

()

(. .)

()

:



(. .) .

() ()

() ()

(. .)

(. .)

(. .)

::

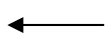
" "

()

()

() ()

:



:

()

/ /

()

()

() ()

()

()

:

() () ()

":()

...

()

)

(

1

.() -

² غابوتشيان، أدوات التعريف والتذكير، ١٣٥.

³ المرجع السابق، ص: ١٤٩.

⁴ المرجع السابق، ص: ١٦٥.

⁵ المرجع السابق،

⁶ المرجع السابق، ص: ١٦٦.

:
 :
 .
):
 (.
 :
 .
 ()
 ()
 ()
 " :
 " :
 :
 () ()
 :

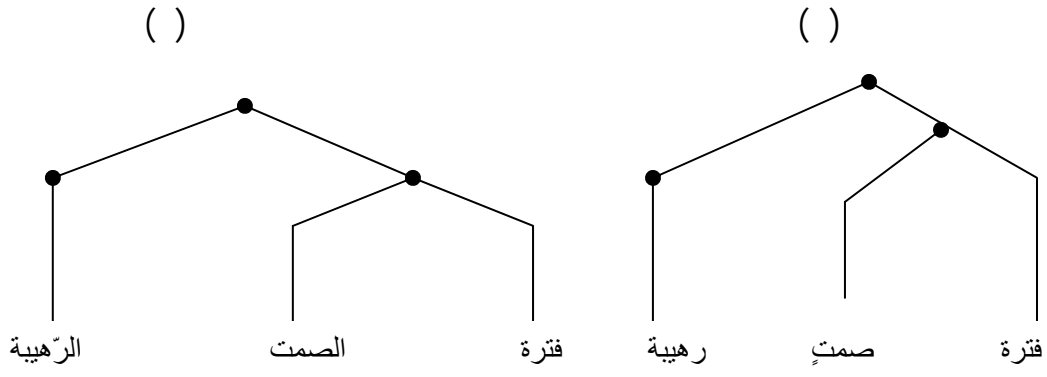
¹ سمّاه: العبارة الوصفية.

² غابوتشيان، ص ١٨٣.

³ يبدو أنّ مصطلح التنكير عنده، يقابل مصطلح التخصيص عند علماء العربية.

⁴ المرجع السابق، ص: ١٦٧.

⁵ المرجع السابق، ص: ١٦٨.



:

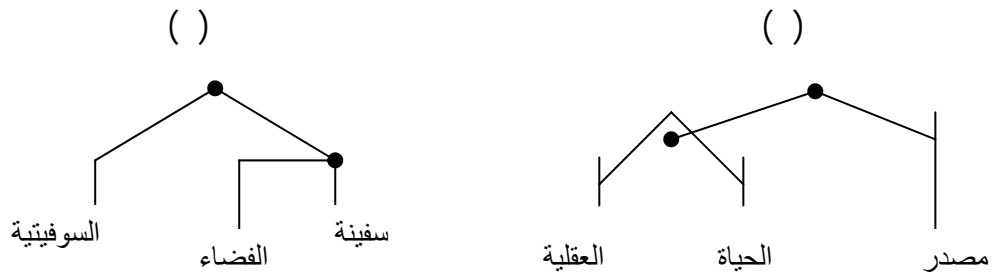
() () ()

"

:

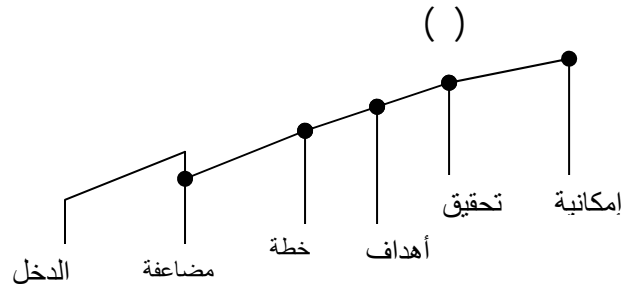
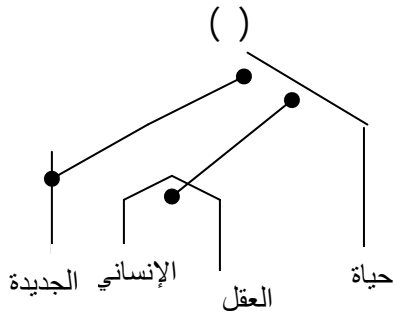
"

:



¹ المرجع السابق، ص: ١٧٠.

² المرجع السابق، ص: ١٧٧.



()

()

*

:

/ + : / + : / +

()

()

()

()

() ()

() ()

¹ المرجع نفسه، ص: ١٧٨.
 * يلاحظ أنه يغفل المركب الوصفي الذي يؤدي فيه الاسم المشتق معنى الحدث.
² المرجع السابق، ص: ١٨٥.

()
 ()
 - : ()
 ()
 .
 " :
 ."
 ()
 .
 .
 .
 .
 " :
 " " "
 " ()
 .
 ()
 :
 () () ()
 ()
 : ()
 .
 •
 •

¹ المرجع السابق، ص: ١٩٠.

²

³ ابن يعيش، شرح المفصل، ج ٢، ص ١١٨.

() ()

...

"

"

- -
-

" ()

() " :

:

... () ... " "

" " ... " "

:

": ()

"

" "

:

":

*

"

¹ الكشور، صالح، نظام التعريف والتكبير في العربية، ص: ١٥٧.

² الإستراياذي، شرح الكافية، ج١، ص: ٢١

³ الكشور، نظام التعريف والتكبير، ص: ١٥٩.

⁴ الغلابيني، جامع الدروس العربية، ج٣، ص(205 - 207)

* يمكن أن نشير هنا إلى أن إضافة العدد إلى المعدود يمكن أن تُعدّ من باب إضافة المميّز إلى التميّز.

⁵ الكشور، ص: (١٦٠ - ١٦١).

"

() () "

() ()

- -

() ()

:(

- -

() ()

(

"

"

()

: () ()

- -

(:) -

() ()

:

- - -

: () ()

-(

¹ المرجع السابق ص: ١٦١ .
² الكشو، ص: ١٦٤ .
³ المرجع السابق، ص: ١٦٥ .

-(

: ()

()

()

:

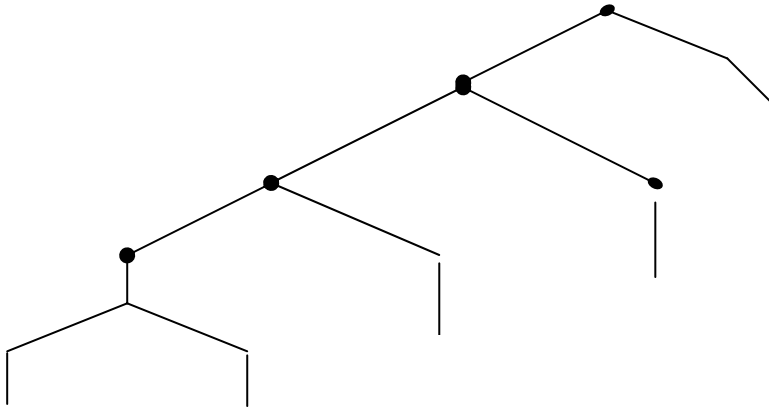
:

:

+

+

+



() () () () () ()
 () () () () () ()

"

.()

:"

¹ الكشور، ص: ١٧٠
² المرجع السابق، ص: ١٨٨
³ المرجع السابق، ص: ١٨٩.

-
 : (:) -
 :
 :
 -
 -
 :
 :
 :
 :
 (of) -
 :
 :
 ()
 :
 :
 ()
 -
 :
 ... -
 :
 -

¹ الموسى، الصورة، ص: ٢٤.
² المصدر نفسيه، ص ٢٤.

. :
 - :
 - :
 (...)
 : - :
 () () () -
 () () () .()
 : (" ") :
 - - -
 - -
 : () -
 () -
 () () ()
 () () ()
 () () ()
 - -

:
 :
 ()
 :
 " :
 " :
 " :
 :
 () *
 :
 *
 :
 :
 : -
 : -
 : -
 :
 :
 :
 () -

¹ سورة الفاتحة، الآية: ٤
² سورة يوسف، الآية: ٧٦
³ غابيشان، ص: ١٧٨
⁴ صحيفة الدستور، عمان، الأردن، ٢٠٠٦/٩/٤

: [] : ()
 . ()

" ()

:

¹ الموسى، الصورة، ص ٥١
² الموسى، الصورة، ص: ٥٢.
³ المصدر نفسه، ص: ٦٥.

:

:

:

I held the box

. :) (held :)

(held the box)

.(the box

:

(:) (:) ()

:

()

()

:

:

:

.

.

-

-

-

-

-

() ()
 . () () ()
 :
 . (...)
 :
 : ()
 -
 () ()
 : () ()
 -
 () ()
 : ()
 -
 :
 :
 :
 :

() (:) () ()

()

:

-:

()

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

-

" :

() :

"

-

:

-

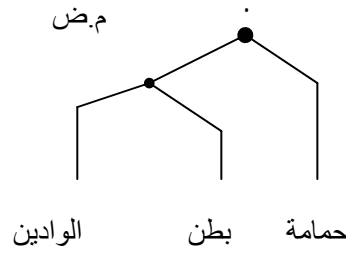
-

:

-

:

م.ض

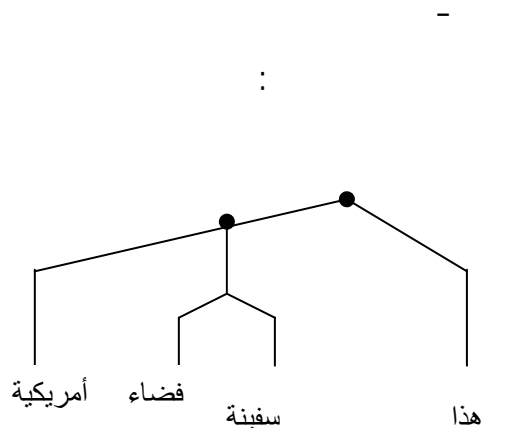
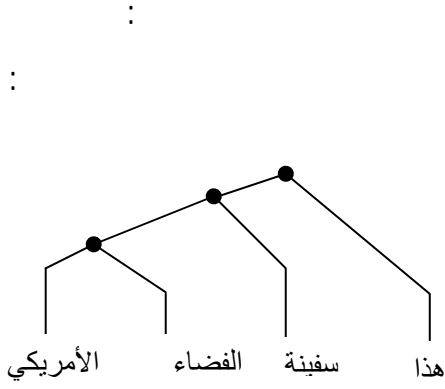


الوادين

بطن

حمامة

(.) : + : ← :



()

)

()

()

()

()

()

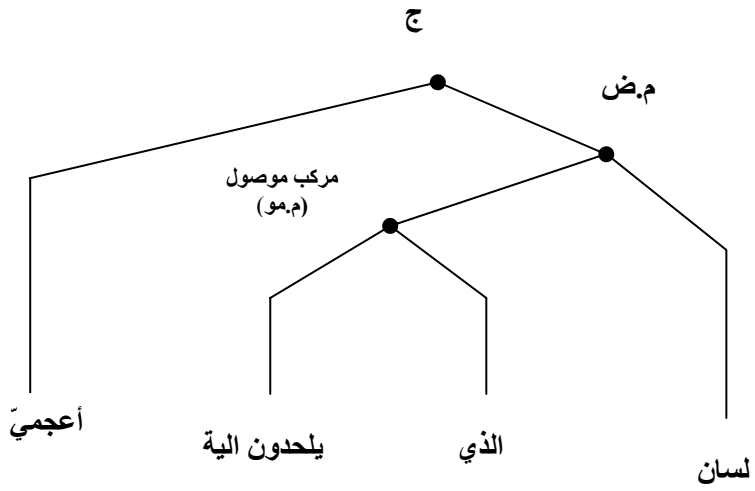
)

- :

"

":

:



:

(:)

- :

:

¹ سورة النحل، الآية: ١٠٣

()
 :
 .() + () ← (.) -
 .() ← -
 (()) ← -
 (:) -

:

:

:

"

"

"

"

∴

()

()

(:)

"

"

∴

()

-

()

()

:

()

-

()

¹ يوسف، ١٠٠.
² المنافقون، ١٠.
³ الروم: ٤

() ()

:

" -

"... -

" .. -

" -

() -

() -

() ()

()

:

. -

-

-

-

" ()

"

()
()

()

()

:

()

" -

1 سبأ: ٣٣

2 الأنفال: ٢٦

3 النصر: ١،٢،٣

4 الأعراف: ١٨٢

5 البقرة: ١١٦.

" -
 .() -
) ()
 .(
 " :
 " :
 :
 : () ()
 :
 : ()
 "
) : ()
 .() : ()
 .() ()
)
 .(:
 " :
) ()
 " ()
 : :

¹ الإسرائيل: ٢٣.

² الكهف: ٣٣.

³ لقمان: ٣٤.

⁴ غافر: ٨١.

⁵ الإسرائيل: ١١٠.

⁶ الحمد، د. علي، المعجم الوافي في النحو العربي، ص: ١٠٠

* مالك هنا زيندة

⁷ القصص: ٢٨.

⁸ مريم: ٦٩.

()
 : ()
 . :
 .() : -
 : ()
) : () ()
 ()
 : () :
 " " -
 " " -
 " " -
 .() : -
 (: -)
 ()
) : ())
 : () : ()
 . : -
 (" : -
 : -
 () : -
 ()
 :

¹ القمل: ١٤.
² الطلاق: ٢.
³ البقرة: ١٧٧.
⁴ الرحمن: ٤٨.

() : -

()
: ()

:

" : ()

:

:

:

*

:

-

:

()

"

..

:

:

-

-

:

"

"

¹ ابن عقيل، شرح ابن عقيل، ج ٢، ص: ٢٨٨.

² ابن هشام، مغني اللبيب، ص: ١٥٩.

³ الحمد، د. علي توفيق ورفيقه، امعجم الوافي في النحو العربي، ص(١١٤ - ١١٥).

⁴ النور: ٤.

⁵ صنفنا المصدر والاسماء المشتقة في نمط واحد؛ لأنهما يلتقيان في الدلالة والتركيب فهما يدلان على الحدث كالفعل، يلتقيان مع الفعل في الجذر.

* أخرج المصدر من الأسماء الجامدة، لأننا نرى أن المصدر والفعل والصفات تشترك في الجذر، والاشتقاق قائم على الجذر.

⁶ الحج: ٤٠.

⁷ الغلابيني، جامع الدروس العربيّة، ج ٣، ص: ٢٧٨.

()

:

.()

: -

()

)

()

(...

:

:

-

-

)

):

.(

."(

:

"

"

-

prepositional phrase

¹ قریش: ١،٢.

² ابن الحاجب، كتاب الكافية في النحو، دار الكتب العلميّة، بيروت، المجلد الأول، ١٩٨٥، ص: (٢٧٨ – ٢٨٢)...

(prepositional phrase)

+ (prep)

()

The)

:

(man in the corner

.....

- Junsbook, Top of the table, The book shop.

(S)

(of)

:

(Table Top)

(desk top)

compound nouns :

:

Home work , olive oil , play write

work Home

I have)

(bought shirt of cotton

(I've met 3 men)

(shirt of cotton)

()

(The men)

()

(three) (Men)

()

(I have talked to three women) (I have seen Three wamen)

(More Feen)

()

: Unusually , usually:

() .. "

()

:

:

:

(phrase)

(Phre – p) (NB adJ - P)

- 1- The fact that Bill failed the exam is true.
- 2- The rumor that Bill and Mari are getting married is not true.
- 3- The idea of spending his life in prison horrified him.
- 4- The notion of teaching English Grammar is burring
- 5- The plan of rebuilding the castel wasn't materialized.

(Bill)

(Bill and Mari)

(Hiad)

(appositive)

(Numeral)

(that)

- 1- that Bill came late surprised us.
- 2- I know that bill is honest.
- 3- The idea is that we should leave early
- 4- The fact that Bill came late is odd.

(wh - cluses) *

(wh)

Who, where, why, which, what and how

: (that)

1- who will be the Director next year is none of my pisnece.

2- why they lift was not knewn.

3- what he want is unknown.

4- the problem is who will look after the cheep.

(if - Cluses) *

Whether (unless) " " (if)

:

1- I asked them if they wanted tea.

() -

2- do you know wether the Banks are opened.

(wether) -

:

3- wether Mari likes Bill or not is not clear.

(Nominal – Relative cluse) *

:

1- I will accept what ever they offer me.

2- I will accept the things which they offer me.

3- who ever defeats the enemy shall marry the princes alecsandra.

4- I 'll give who ever solves this problem generous grant.

5- Home is who ever your friends and family are.

6- call me what ever(Names)you want.

" " : -

:

()

%			-
%			-
%			-
%			-
%			-
%			-
%			*

	.		.
	.		.
	.		.
.	.		.
.	.		.
	.		.
	.		.
	.		.
	.		.
.	.	.	.
	.		.
.	.		.

	.		.
	.		.
	.	.	.
	.		.
	.		.
	.		.
	.		.
	.		.
	.		.
	.		.
	.		.
	.		.
	.		.

	.		.
	.		.
	.		.

()

()

()

¹ ورد في النص: الخمس ليرات.

:() ()

"The child goes to the :

camp"

()

The Original Sentence

- 1- It was war – time war time
- 2- In war the winds of peace winds of peace
gather the combatants to
repose
- 3- Winds of Peace
- 4- But this is not so with gunshot
hostilities that are always
never move than a gunshot
away
- 5-I lived with seven brothers, Seven brothers
all of them strong all of them
- 6- Father didn't much care his wife
for his wife
- 7- Then there was our aunt - our aunt -
and her husband and five - her husband -
children who also lived - five children -
with us who also lived
with us

8- And our old grand father Our old grand father

.[]

9- He found five pastries on the table or in the pocket of one of the many pairs of pants which would be hanging up the pocket of one of the many pairs of pants - which would be hanging up

10 - He went straight out and bought a newspaper newspaper

11 - Let me tell you that it wasn't a time of hostilities in the sense that you might think Time of hostilities in the sense that you might think

12 - This meant that five pastries had been pilfered from some if there had been five piaster's – or from some where

13 - My father and my aunt's husband found a daily task for us

14 - Our job- mine and Isam's – was easy

**15 - There was the policeman's
whistle and the sound of
his shoes pounding on the
stones of the night behind me**

**16 - I saw just what I had
been expecting.**

**17 - I looked in appeal to
my grand father who were
sitting in the corner
wrapped up in his neat**

**Who was sitting
in the corner**

bro

**18 - The only thing he
wanted from the five pounds
was a really big
newspaper that day**

**From the five
pounds big news
-paper**

**19 - None of us bothered
about Isam's protest, about
whether he was telling the
truth or lying**

**-none of us
-about Isam's
protest
-about whether
he was telling
the truth or
lying**

**20 - He was ready to accept
half the money**

Half the money

21 - I lost everything

everything

22 - If I succeeded in keeping If I succeeded in

the whole amount which was my right.

keeping the whole amount which was my right

23 - I was trying to protect my pocket with the five pounds in it.

Protect my pocket with the five pounds in it.

" () "

()

War - time		.
A time of hostilities		.
The winds of peace		.
A gun shot away		.
Miraculously between the shots		.
Seven brothers		.
his wife		.
My Father		.
Eight children		.
During a time of bestialities		.
Then		.
Our aunt		.

Her husband		.
With us		.
Her children		.
In the pocket of one of the pairs of pants		.
A news paper		.
One of us		.
Our(daily)worry	()	.
His news paper		.
Under his clothes		.
His (neat brown) aba		.
The only thing he wanted		.
Every instant night and day		.
What it meant for a child to have five pound his small alert eyes (with) the silence of on old man	()	.
Without seeing in them any reason for answering or concern		.
All sorts of clamor		.
The nearest child		.
Leader of his brothers		.
Our job		.
Rhinoceros		.
My cousins		.
Leader of my brothers		.

My role		.
With Isam		.
The best of what ever was in the basket		.
Very hard		.
In the middle of people		.
In your mothers arms		.
Police mans (thick heavy) shoes		.
Under his shoes		.
In situations like this		.
To close their doors		.
Color of paper		.
Carrying a basket		.
Five pounds		.
He Five ponds		.
His eel		.
In front of the wheels of a truck		.
Behind the door		.
His pocket		.
With me		.
With the savvy of a ten years old child		.
The whole way		.
I threaten them all acing
All of them		.

Read aloud to him the
My life		.
This meant		.
Your mothers arm		.
The whole thing is that....		.
To leave the crowded street		.
street out " "		.
without hesitation " "		.
When ever there was a moments of silence		.
The scene of the Battle		.
We spent nearly ten minutes		.
When the noise had quitted.		.

: his wife - : War time -
 . : Our old grand father -
 (s) (of)
 (his) () ()
 (old) .

() ()

(I heard you)

()

:

:

-

-

-

-

:

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

"

"

:

:)

(+)

(

:

I held the box

.(the box)

(held)

(held the box)

() (:)

()

:

%

.%

.%

.%

.%

%

his _ War time- -
 . wife
 seven - Half the mony -
 brothers
 .
 everything / Gun shot
 -
 The policeman's whistle -
 my aunt's husband -
 :
 -
 -

()"

"

()

()

/

:

()

/

() () ()

()

/ /

()

/

()

() /

-

()

() () :

...

()

/()

()

.()

: ()

()

()

()

.() /

()

:

/ :

.()

/

١٠١

()

.

:

()

/

()

/

()

-

:

()

.

.(/

.

()

:

()

()

Quirk, et al (1972) " A Grammar of Contemporary English Longman.

Quirk, et al (1985) " A Comprehensive Grammar of the English Language.

Greenbaum, Sidney and Randolph Quirk. A Students Grammar of the
English Language

PALESTINE'S CHILDREN



A THREE CONTINENTS BOOK

RETURNING TO HAIFA & Other Stories

Ghassan Kanafani

translated by Barbara Harlow & Karen E. Riley,
with an Introduction and a Biographical Essay on Ghassan Kanafani



LYNNE
RIENNER
PUBLISHERS

BOULDER
LONDON

127



F
K16
P
2000

Contents



Published in the United States of America in 2000 by
Lynne Rienner Publishers, Inc.
1800 30th Street, Boulder, Colorado 80301
www.rienner.com

and in the United Kingdom by
Lynne Rienner Publishers, Inc.
3 Henrietta Street, Covent Garden, London WC2E 8LU

© 2000 by Anni Kanafani. All rights reserved by the publisher.

This is a work of fiction. Names, characters, places, and incidents are the products of the author's imagination or are used fictitiously, and any resemblance to actual persons (living or dead), events, or locales is entirely coincidental.

Library of Congress Cataloging-in-Publication Data
Kanafani, Ghassan.

[Short stories. English. Selections]

Palestine's children : Returning to Haifa and other stories / Ghassan Kanafani; translated by Barbara Harlow and Karen E. Riley; with an introduction to the work and a biographical essay on Ghassan Kanafani.

p. cm.

Includes bibliographical references.

ISBN 0-89410-865-4 (hc : alk. paper)

ISBN 0-89410-890-5 (pb : alk. paper)

1. Palestinian Arabs—Fiction. 2. Exiles—Palestine—Fiction. 3. Kanafani, Ghassan. I. Harlow, Barbara. II. Riley, Karen E. III. Title.

PJ7842.A5 A24 2000

892.7'36—dc21

00-024783

British Cataloguing in Publication Data

A Cataloguing in Publication record for this book is available from the British Library.

Printed and bound in the United States of America

The paper used in this publication meets the requirements of the American National Standard for Permanence of Paper for Printed Library Materials Z39.48-1984.

5 4 3 2 1

128

<i>Ghassan Kanafani: A Biographical Essay</i>	
Karen E. Riley	1
<i>Introduction</i>	
Karen E. Riley & Barbara Harlow	13
The Slope	29
Paper from Ramleh	37
A Present for the Holiday	43
The Child Borrows His Uncle's Gun and Goes East to Safad	47
Doctor Qassim Talks to Eva About Mansur Who Has Arrived in Safad	59
Abu al-Hassan Ambushes an English Car	75
The Child, His Father, and the Gun Go to the Citadel at Jaddin	83
The Child Goes to the Camp	99
The Child Discovers that the Key Looks Like an Axe	107
Suliman's Friend Learns Many Things in One Night	113

129 v

The Child Goes to the Camp



IT WAS WAR-TIME. NOT WAR REALLY, BUT HOSTILITIES, to be precise . . . a continued struggle with the enemy. In war the winds of peace gather the combatants to repose, truce, tranquility, the holiday of retreat. But this is not so with hostilities that are always never more than a gunshot away, where you are always walking miraculously between the shots. That's what it was, just as I was telling you, a time of hostilities.

I lived with seven brothers, all of them strong. Father didn't much care for his wife, but this may have been because she had borne him eight children during a time of hostilities. Then there was our aunt and her husband and five children who also lived with us. And our old grandfather. Whenever he found five piastres on the table or in the pocket of one of the many pairs of pants which would be hanging up, he went straight out and bought a newspaper. As you know, he couldn't read, so in order to find out what was being done, he had to have one of us read aloud to him the latest bad news.

At that time—but first let me tell you that it wasn't a time of hostilities in the sense that you might think. That is, there wasn't really a war. In fact there was no war at all. The whole thing is that we were eighteen people from different generations

living in one house, which would have been more than enough at any time. None of us had managed to find work, and hunger—which you may have heard of—was our daily worry. That is what I call the time of hostilities. You know, there is absolutely no difference. We fought for our food and then fought each other over how it would be distributed amongst us. Then we fought again. Whenever there was a moment of silence, my grandfather would carefully get his rolled-up newspaper out from under his clothes and look at everyone with his small alert eyes. This meant that five piastres had been pilfered from some pocket—if there had been five piastres—or from somewhere. A quarrel would follow. My grandfather kept hold of the newspaper, resisting the voices with the silence of an old man who has lived long enough to have heard all sorts of clamor and quarrels without seeing in them any reason for answering or concern. Then, when the noise had quieted down, he would lean towards the nearest child (he didn't, however, trust the girls) and give him the newspaper, always keeping hold of it by the edge, so no one would take it from him.

Isam and I were ten years old. He was a little bigger than I was, and still is, and he considered himself the leader of his brothers, my cousins, just as I consider myself the leader of my brothers. After long efforts, my father and my aunt's husband finally found a daily task for us. Together we were to carry a big basket and walk for about an hour and a quarter until we came to the vegetable market sometime in the afternoon. You don't know what the vegetable market was like: the shops were beginning to close their doors and the last of the trucks loaded with what was left from the day were getting ready to leave the crowded street. Our job—mine and Isam's—was easy and difficult at the same time. We had to find stuff to fill our basket. From in front of the shops or behind the cars. Even from the tops of tables if the owner happened to be taking a nap or was inside his store.

I tell you it was a time of hostilities. You don't know how a fighter runs between shots all day long. Isam would shoot off like an arrow just in order to snatch a torn head of lettuce or a bunch of onions or maybe even some apples from between the

131

wheels of a truck which was about to move. My role was to hold off the fiends—the rest of the children. If they tried to get hold of an orange, I would see it in the mud before them. We worked all afternoon, Isam and I, struggling with the other children, or the shop owners or the truck drivers, sometimes even with the police. The rest of the time I fought with Isam.

That was the time of hostilities. I tell you this because you don't know. The world at that time had turned upside down. No one expected any virtue. This would have seemed too ridiculous. This itself was virtue's triumph. Fine. When a man dies, so too does virtue. No? Well then, let's suppose that, in a time of hostilities, it was your job to safeguard the first and foremost virtue, which is to keep yourself alive. Everything else is secondary. But in a time of continuous hostilities, nothing is secondary. Everything comes first.

Once the basket was filled, it was up to us to carry it back home. This was to be everybody's meal on the following day... But of course Isam and I had agreed between ourselves that we would eat the best of whatever was in the basket on the way home. There was never any objection to this agreement from either of us, and we never gave it away. It just happened. We were together in a time of hostilities.

Winter was very hard that ill-fated year and we were carrying a very heavy basket (I haven't forgotten this, it was like falling into a trench during a battle, a trench that held you like a bed). I ate the apples and we left through the market gate and went on out into the main street. We spent nearly ten minutes in the middle of people, cars, buses, and shop fronts without exchanging a word (the basket was really heavy and both of us were completely absorbed in eating), when suddenly...

But no, I can't describe it. It's absolutely indescribable. It's as if the enemy had you at swordpoint, and you had no weapon of your own, and then just at that instant you find yourself in your mother's arms...

Let me tell you what happened. Isam and I were carrying the basket, just as I said, and there was a policeman standing in the middle of the road. The street was wet and we had no shoes. Perhaps it was because I was looking at the policeman's thick

132

heavy shoes, but anyway, suddenly I saw it there under his shoes. It was about six meters away, but I knew, maybe from the color, that it was more than one pound.

In situations like this, we don't stop and think. People talk about instinct. That's fine. I don't know if the color of paper money has anything to do with instinct, but it does have a connection with that kind of savage force, crime, the power to strangle someone in a moment, which is there deep inside every one of us. What I do know is that a man, in a time of hostilities, doesn't think when he sees a paper bill under a policeman's shoes, even if he's six meters away and carrying a basket of rotten vegetables. And that's what I did. I threw away what was left of the apple and dropped the basket. Probably Isam staggered under the sudden weight of the basket which I left in his hands, although he too had seen the money only a second after I did. But of course I had already pounced, compelled by this unknown force which drives the rhinoceros to attack blindly. I wanted it more than anything. I bumped up against the policeman's legs with my shoulder so that he fell back in alarm. I lost my balance, but I didn't fall and at that instant—just when the foolish think that it's all over—I saw it. Five pounds. All I had to do was pick it up as I fell. But I got up faster than I fell and I ran faster than I got up. Practically the whole world began to run after me. There was the policeman's whistle and the sound of his shoes pounding on the stones of the street right behind me. Isam screamed. The buses rang their bells. People were shouting . . . were they really right behind me? You can't say and neither can I. But I ran until I was sure that no one in all the armored squadrons could ever catch me. With the savvy of a ten-year-old child, I took another road. Maybe it was because I thought that Isam would point the policeman in my direction. I don't know. I didn't turn around, I just ran, and didn't even think how tired I was. I was a soldier, fleeing the scene of the battle I had been forced to enter. There was nothing in front of me but to keep running and the world with its shoes was behind me at my heels.

I didn't reach home until after dark and when the door was opened for me I saw just what I had been expecting, deep inside

133

me, to see. Seventeen people waiting in the house for me. They studied me quickly but carefully and I met their glare from the doorway where I stood. My hand closed around the five pounds in my pocket and my feet remained firm on the ground.

Isam was standing between his mother and father. He was furious. Most likely there had been a quarrel between the two families before my arrival. I looked in appeal to my grandfather who was sitting in the corner wrapped up in his neat brown aba and staring at me in amazement. A wise man, a real man, knows how he's supposed to see the world. The only thing he wanted from the five pounds was a really big newspaper that day.

I waited impatiently for the argument. Isam, of course, had lied and told them that he was the one who found the five pounds and that I forced it from him. Not only that, but that I had made him carry the heavy basket by himself the whole way. Didn't I tell you that it was a time of hostilities? None of us bothered about Isam's protest, about whether he was telling the truth or lying. That was something that couldn't matter less. Isam maybe wasn't lying, but it was certain that no one worried about the truth. Furthermore, here he was, content to humble himself and even admit for the first time that I had hit him and that I was stronger than he was. But what did all of this matter, given the really important questions?

His father was thinking of something completely different. He was ready to accept half the money and my father wanted the other half. If I succeeded in keeping the whole amount, which was my right, I would have it all, but if I gave up this right, then I lost everything and they would split the money.

They didn't really know what it meant for a child to have five pounds in his pocket in a time of hostilities . . . I threatened them all, using words I had never in my life used, to leave home forever. The five pounds were for me and only me.

Of course, you must know. They were absolutely furious and lost all control. Everybody was against me. First of all, they just warned me. But I was prepared for even more than that, so they began to hit me. Of course, I couldn't defend myself, and since I was trying as best as I could to protect my pocket with the five pounds in it, it was especially hard for me to ward off

134

their well-aimed blows. In the beginning my grandfather watched the battle excitedly, but then, when it began to lose its interest, he got up and stood in front of them and whispered to me to hold on to him. He proposed a settlement. He said that the grown-ups had no right to the money, but that on the first sunny day I had to take all the children in the house to some place where we could all spend the money in any way we wanted.

I was just about to refuse the proposal when I was struck by something I saw in my grandfather's eyes. I didn't exactly understand what it was, I only felt that he was lying and that he wanted me to keep quiet.

You know that a child of ten—in a time of hostilities—can't understand things (even if there is any need to understand them) the way an old man like my grandfather can. But that's what happened anyway. He wanted his newspaper every day for a whole week and he was trying to appease me whatever the price.

So we came to an agreement that evening, but I knew that it wouldn't end there. I would have to guard the five pounds every instant, night and day. And I had to put off the other children. I also had to resist all my mother's attempts to bribe me which she could never refrain from. She told me that evening that five pounds would buy two rotls of meat, or a new shirt for me. Or medicine if it were needed. Or books, since they were thinking of sending me to school next summer. But what was the use of all this talk? It was as though she wanted me to stop and clean my shoes while running between gunshots.

I didn't know exactly what I was going to do. But all the next week I managed to hold the other children off with a thousand lies, which, or course, they knew were lies, but they never said anything about it. There was no virtue here. You know. It was a different question and revolved around only one kind of virtue: five pounds.

My grandfather, however, understood matters and he wanted his newspaper at a fair price for his role in the whole story. When a week had gone by, he began to grumble. He knew (he had to know it since the truth doesn't escape an old man like

135

him) that I wasn't going to buy him his newspaper. He felt that he had lost his opportunity, but he didn't do anything to recover it.

By the time another ten days had gone by, everyone believed that I had spent the five pounds and that the hand I kept in my pocket was holding on to nothing, that it was all a trick. But my grandfather knew that the five pounds was still in my pocket, and that night in fact he got up and tried to take it while I was sleeping (I always slept with my clothes on). I woke up, however, and he went back to his bed and to sleep without a word.

I told you, it was a time of hostilities. My grandfather was sad because he didn't get his newspaper, not because I broke a promise which had not been agreed to. He understood the time of hostilities, and so for the next two years he didn't scold me for whatever I did. In the meantime Isam forgot the story too. Deep inside him—like an unruly child—he understood exactly what had happened. We continued our daily trips to the vegetable market. We argued less than at any other time before and we spoke little. It seemed that something—a strange wall suddenly went up within him—it was still a time of hostilities—I was the one who breathed a sigh of relief—I don't know how—it seemed that something else was in the air.

I remember that I kept the five pounds in my pocket for five weeks. I was looking for the right moment, when the time of hostilities would be over. But whenever this was about to happen, it seemed as if we were getting deeper into hostilities rather than out of them.

How can you possibly understand that? I had the five pounds, but something kept me from using it. As long as it was in my pocket it seemed to me like a key that I held in the palm of my hand and that I could use at any time to open the door and walk out. But whenever I got close to the lock I smelled still another time of hostilities behind the door, further away, like going back once more to the beginning.

What followed is not important. I went one day with Isam to the market. While I was trying to grab a bunch of chard which was in front of the wheels of a truck, the truck slowly

136

started to move. At the last minute I slipped and fell underneath it. It was really lucky that the wheels didn't go over my legs, but stopped just as they hit them. In any case, I regained consciousness in the hospital. The first thing I did—as you must have guessed—was to look for the five pounds. But it wasn't there.

I think it was Isam who took it when he was with me in the car on the way to the hospital. But he didn't say and I didn't ask. We just looked at each other and understood. I wasn't angry because it had been fun and I had shed my blood to take the five pounds. I was only sad that I had lost it.

You won't understand. It was in a time of hostilities.

—translated by Barbara Harlow

الصغير يذهب إلى المخيم / غسان كنفاني

كان ذلك زمن الحرب . الحرب ؟ كلا ، الاشتباك ذاته ..
الالتحام المتواصل بالعدو لأنه أثناء الحرب قد تهب نسمة سلام يلتقط فيها المقاتل أنفاسه . راحة . هدنة . إجازة تقهقر . أما
في الاشتباك فإنه دائما على بعد طلقة . أنت دائما تمر بأعجوبة بين طلقتين ، وهذا ما كان ، كما قلت لك ، زمن الاشتباك
مستمر .

كنت أسكن مع سبعة إخوة كلهم ذكور شديدو المراس ، وأب لا يحب زوجته ربما لأنها أنجبت له زمن الاشتباك ثمانية
أطفال .

وكانت عممتا وزوجها وأولادها الخمسة يسكنون معنا أيضا ، وجدنا العجوز الذي كان إذا ما عثر على خمسة قروش على
الطاولة أو في جيب أحد السراويل الكثيرة المعلقة ، مضى دون تردد واشترى جريدة ،
ولم يكن يعرف ، كما تعلم ، القراءة وهكذا كان مضطرا للاعتراف دائما بما اقترف كي يقرأ أحدنا على مسمعيه الثقيلين آخر
الأخبار .

في ذلك الزمن - دعني أولاً أقول لك أنه لم يكن زمن اشتباك بالمعنى الذي يخيل إليك ، كلاً لم تكن ثمة حرب حقيقية -
لم تكن ثمة أي حرب على الإطلاق ، كل ما في الأمر أننا كنا ثمانية عشر شخصاً في بيت واحد من جميع الأجيال التي يمكن
أن تتوفر في وقت واحد .

لم يكن أي واحد منا قد نجح بعد في الحصول على عمل ، وكان الجوع
- الذي تسمع عنه - همنا اليومي . ذلك أسميه زمن الاشتباك .

أنت تعلم . لا فرق على الإطلاق . كنا نقاتل من أجل الأكل ، ثم نقاتل لنوزعه فيما بيننا ، ثم نقاتل بعد ذلك . ثم في أية لحظة
سكون يخرج جدي جريدته المطوية باعتناء من بين ملبسه ناظراً إلى الجميع بعينيه الصغيرتين المتحفظتين ، معنى ذلك أن
خمس قروش قد سرقت من جيب ما - إذا كان فيه هناك خمسة قروش - أو من مكان ما .

وأن شجاراً سيقع . ويظل جدي متمسكاً بالجريدة وهو يتصدى للأصوات بسكون الشيخ الذي عاش وقتاً كافياً للاستماع إلى
كل أنواع الضجيج والشجار دون أن يرى فيها ما يستحق الجواب أو الاهتمام ..
وحين تهدأ الأصوات يميل إلى أقرب الصبيان إليه (ذلك أنه لم يكن يتق بالبنات) ويدفع له الصحيفة وهو يمسك بطرفها ،
كي لا تخطف .

وكنت مع عصام في العاشرة - كان أضخم مني قليلاً كما هو الآن .. وكان يعتبر نفسه زعيم أخوته أبناء عمتي - كما كنت
أعتبر نفسي زعيم أخوتي .. وبعد محاولات عديدة استطاع والدي وزوج عمتي أن يجدا لنا مهنة يومية : نحمل السلة
الكبيرة معاً ونسير حوالي ساعة وربع حتى نصل على سوق الخضار بعد العصر بقليل .

في ذلك الوقت أنت لا تعرف كيف يكون سوق الخضار : تكون الدكاكين قد بدأت بإغلاق أبوابها وآخر الشاحنات التي تعبا بما
تبقى تستعد لمغادرة ذلك الشارع المزحوم . وكانت مهمتنا - عصام وأنا - هينة وصعبة في آن واحد . فقد كان يتعين علينا
أن نجد ما نعي به سلتنا : أمام الدكاكين . وراء السيارات . وفوق المفارش أيضاً إذا كان المعنى في قبولة أو داخل
حائوته .

أقول لك أنه كان زمن الاشتباك : أنت لا تعرف كيف يمر المقاتل بين طلقتين طوال نهاره . كان عصام يندفع كالسهم لنخطف
رأس ملفوف ممزق أو حزمة بصل ، وربما تفاحة من بين عجلات الشاحنة وهي تتأهب للتحرك ، وكنتم أنا بدوري أتصدى
للسياطين - أي بقية الأطفال -

إذا ما حاولوا تناول برتقالة شهدتها في الوحل قبلهم .
وكنا نعمل طوال العصر ننتاجر عصام وأنا من جهة مع بقية الأطفال أو أصحاب الدكاكين أو السائقين أو رجال الشرطة
أحياناً ، ثم أنتشجر مع عصام فيما تبقى من الوقت .

كان ذلك زمن الاشتباك . أقول هذا لأنك لا تعرف : أن العالم وقتئذ يقف على رأسه ، لا أحد يطالبه بالفضيلة .. سيبدو
مضحكاً من يفعل .. أن تعيش كيفما كان وبأية وسيلة هو انتصار مرموق للفضيلة . حسناً . حين يموت المرء تموت الفضيلة
أيضاً . أليس كذلك ؟ إذن دعنا نتفق بأنه في زمن الاشتباك يكون من مهمتك أن تحقق الفضيلة الأولى ، أي أن تحتفظ بنفسك
حياً . وفيما عدا ذلك يأتي ثانياً . ولأنك في اشتباك مستمر فإنه لا يوجد ثانياً . أنت دائماً لا تنتهي من أولاً .

وكان يتعين علينا أن نحمل السلة معاً حين تمتلئ ونمضي عاندين إلى البيت : ذلك كان طعامنا جميعاً لليوم التالي .. بالطبع
كنا أنا وعصام متفقين على أن نأكل أجود ما في السلة على الطريق ، ذلك اتفاق لم نناقشه أبداً - لم نعلن عنه أبداً ولكنه كان
يحدث وحده . ذلك أننا كنا معاً في زمن الاشتباك .

وكان الشتاء شديد القسوة ذلك العام الملعون وكنا نحمل سلة ثقيلة حقاً ،

(هذا شيء لا أنساه ، كأنك وقعت أثناء المعركة في خندق فإذا به يحوي سريراً) وكنتم أكل تفاحة ، فقد كنا خرجنا من
بوابة السوق وسرنا في الشارع الرئيسي ، قطعنا ما يقرب من مسير عشر دقائق بين الناس والسيارات والحافلات
وواجهات الدكاكين دون أن نتبادل كلمة (لأن السلة كانت ثقيلة حقاً وكنا نحن الاثنين منصرفين تماماً إلى الأكل) وفجأة ..
لا .. هذا شيء لا يوصف . لا يمكن وصفه : كأنك على نصل سكين من عدوك وأنت دون سلاح وإذا بك في اللحظة ذاتها
تجلس في حضن أمك

دعني أقول لك ما حدث : كنا نحمل السلة كما قلت لك ، وكان شرطي يقف في منتصف الطريق ، وكان الشارع مبتلاً ، وكنا
تقريباً دون أحذية . ربما كنت أنظر إلى حذاء الشرطي الثقيل والسميك حين شهدتها فجأة ، هناك كان طرفها تحت حذانه أي
كنت بعيداً حوالي ستة أمتار ولكنني عرفت ، ربما من لونها أنها أكثر من ليرة واحدة .

نحن في مثل هذه الحالات لا نفكر . يتحدثون عن الغريزة .

كان قد شاهدها بعدي بلحظة واحدة . إلا أنني بالطبع كنت قد اندفعت تحت وطأة تلك القوة المجهولة التي تجبر وحيد القرن على هجوم أعمى ، غايته آخر الأرض ونطحت سافي الشرطي بكتفي فتراجع مذعوراً . وكان توأزني أنا الآخر قد اختل . ولكنني لم أفق على الأرض - وفي تلك اللحظة التي يحسب فيها الأغبياء أن لا شيء يمكن له أن يحدث - شاهدتها : كانت خمس ليرات . لم أشاهدها فحسب بل التقطتها واستمكنت سقوطي . إلا أنني وقفت بأسرع مما سقطت وبدأت أركض بأسرع مما وقفت .

ومضى العالم بأجمعه يركض ورائي : صفارة الشرطي ، وصوت حذائه يقرع بلاط الشارع ورائي تماماً . صراخ عصام ، أجراس الحافلات . نداء الناس .. هل كانوا حقاً ورائي ؟ ليس بوسعك أن تقول وليس بوسعي أيضاً . لقد عدت متأكداً حتى صميمي أن لا أحد في كل الكواكب السيارة يستطيع أن يمسكني . ويعقل طفل العشر سنوات سلكت طريقاً آخر . ربما لأنني حسبت أن عصام سيدل الشرطي على طريقي . لست أدري . لم ألتفت . كنت أركض ولا أذكر أنني تعبت ..

كنت جندياً هرب من ميدان حرب أجبر على خوضها وليس أمامه إلا أن يظل يدعو والعالم وراءه كعبي حذائه . ووصلت البيت بعد الغروب ، وحين فتح لي الباب شهدت ما كنت أشعر في أعماقي أنني سأشاهده : كان السبعة عشر مخلوقاً في البيت ينظرونني . وقد درسوني بسرعة ، ولكن بدقة ، حين وقفت في حلق الباب أبادلهم النظر : كفي مطبقة على الخمس ليرات في جيبي ، و قدماي ثابتتان في الأرض .

كان عصام يقف بين أمه وأبيه ، وكان غاضباً . لاشك أن شجاراً قد وقع بين العائلتين قبل مقدمي . واستجذبت بجدي الذي كان جالساً في الركن ملتحفاً بعباءته البنية النظيفة ينظر إلي باعجاب : رجلاً كان حكيماً . رجلاً حقيقياً يعرف كيف ينبغي له أن ينظر إلى الدنيا . وكان كل ما يريده من الخمس ليرات : جريدة كبيرة هذه المرة . وانتظرت الشجار بفارغ الصبر . كان عصام بالطبع قد كذب : قال لهم أنه هو الذي وجد الخمس ليرات وأني أخذتها منه بالقوة . ليس ذلك فقط بل أجبرته على حمل السلة الثقيلة وحده طوال المسافة المنهكة : ألم أقل لك أنه زمن الاشتباك ؟ لم يكن أي واحد منا مهتماً بمناقشة عصام ، بصدقه أو بكذبه فذلك شيء لا يمكن أن يكون له أية قيمة . لم يكذب عصام فقط بل كان متأكداً أن أحداً لن يهتم بالحقيقة . ليس ذلك فقط بل أن ارتضى أن يذل نفسه ويعلم ربما للمرة الأولى أنني ضربته وأني أقوى منه .. ولكن ما قيمة ذلك كله أمام المسألة الحقيقية الأولى .

كان أبوه يفكر بشيء آخر تماماً : كان مستعداً لقبول نصف المبلغ وكان أبي يريد النصف الآخر لأنني لو نجحت في الاحتفاظ بالمبلغ كله لصار من حقي وحدي أم إذا تخليت عن هذا الحق فسأفقد كل شيء وسيتقاسمون المبلغ . ولكنهم لم يكونوا يعرفون حقاً معنى أن يكون الطفل ممسكاً بخمس ليرات في جيبيه زمن الاشتباك . وقد قلت لهم جميعاً بلهجة حملت لأول مرة في حياتي طابع التهديد بترك البيت والى الأبد : أن الخمس ليرات لي وحدي . وأنت تعرف لا شك : جن جنونهم ، ضاع رابط الدم فوقفوا جميعاً ضدي . لقد أنزروني أولاً ، ولكنني كنت مستعداً لما هو أكثر من ذلك ثم بدأوا يضربونني . وكان بوسعي بالطبع أن أدافع عن نفسي ، ولكن لأنني أردت أن أحتفظ بكفي داخل جيبي مطبقة على الخمس ليرات فقد كان من العسير حقاً أن أتجنب الضربات المحكمة . وقد تفرج جدي على المعركة باستثارة بادئ الأمر ثم لما بدأت المعركة تفقد طرافتها قام فوقف أمامهم وبذلك يسر لي أن ألتصق به . اقترح تسوية . قال إن الكبار لا حق لهم بالمبلغ ، ولكن من واجبي أن أخذ كل أطفال البيت ذات يوم صحو إلى حيث نصرف جميعاً مبلغ الخمس ليرات كما نشاء . عندها تقدمت إلى الأمام معتزماً الرفض إلا أنني في اللحظة ذاتها شهدت في عينيه ما أمسكني .

لم أفهم بالضبط آنذاك ما كان في عينيه ، ولكنني شعرت فقط إنه كان يكذب وأنه كان يرجوني أن أصمت . أنت تعرف أن طفل العشر سنوات - زمن الاشتباك - لا يستطيع أن يفهم الأمور (إذا كان ثمة حاجة لفهمها) كما يستطيع عجوز مثل جدي . ولكن هذا هو ما حصل . كان يريد جريدته ربما كل يوم لمدة أسبوع - وكان يهيمه أن يرضيني بأي ثمن - وهكذا اتفقنا ذلك المساء . ولكنني كنت أعرف أن مهمتي لم تنته ، فعلي أن أحمي الليرات الخمس كل لحظات الليل والنهار . ثم علي أن أماطل بقية الأطفال . وعلي أيضاً أن أواجه محاولات إقناع وتغريز لن تكف عنها أُمي . قالت لي ذلك المساء أن الليرات الخمس تشتري رطلين من اللحم ، أو قميصاً جديداً لي ، أو دواء حين تقتضي الحاجة ، أو كتاباً إذا ما فكروا بإرسالني إلى مدرسة مجانية في الصيف القادم .. ولكن ما نفع الكلام ؟ كأنها كانت تطلب مني وأنا أعبر بين طلفتين أن أنظف حذائي .

ولم أكن أعرف بالضبط ماذا كنت أنوي أن أفعل ، ولكنني طوال الأسبوع الذي جاء بعد ذلك نجحت في ماطلة الأطفال بالآلاف من الكذبات التي كانوا يعرفون أنها كذلك ولكنهم لم يقولوا إطلاقاً أنها أكاذيب . لم تكن الفضيلة هنا . أنت تعلم . كانت مسألة أخرى تدور حول الفضيلة الوحيدة آنذاك : الخمس ليرات .

ولكن جدي كان يفهم الأمور وكان يريد جريدته ثمناً معادلاً لدوره في القصة ، وحين مضى الأسبوع بدأ يتململ . لقد شعر (من المؤكد أنه شعر ، ذلك لأن ، رجلاً عجوزاً مثله لا يمكن أن تفوته تلك الحقيقة) أنني لن أشتري له الجريدة ، وأنه فقد فرصته ، ولكنه لم يكن يمتلك أية وسيلة لاستردادها .

وحين مرت عشرة أيام أخرى اعتقد الجميع أنني صرفت الليرات الخمس ، وأن يدي في جيبي تقيض على فراغ ، على خديعة ، ولكن جدي كان يعرف أن الليرات الخمس ما تزال في جيبي . وفي الواقع قام ذات ليلة بمحاولة لسحبها من جيبي وأنا مستغرق في النوم ، (كنت آنام بملابسي) إلا أنني صحت فتراجع إلى فراشه ونام دونما كلمة .

قلت لك ، أنه زمن الاشتباك . كان جدي حزينا لأنه لم يحصل على جريدة وليس لأنني نكثت بوعده لم يتفق عليه . كان يفهم زمن الاشتباك ، ولذلك لم يلمني طوال السنتين اللتين عاشهما بعد ذلك على ما فعلته . وقد نسي عصام القصة أيضاً . كان في أعماقه - كطفل صعب المراس - يفهم تماماً ما حدث . واصلنا رحلاتنا اليومية إلى سوق الخضار ، كنا نتشاجر أقل من أي وقت مضى ونحادث قليلاً .

يبدو أن شيئاً ما - جدرأ مجهولاً ارتفع فجأة بينه - هو الذي مازال في الاشتباك . وأنا الذي تنفست - ليس يدري كم - هوأ آخر .

ولكن حين كنت اقترب من القفل كنت أشم وراء الباب زمن اشتباك آخر. أبعد مدى . كأنه عودة إلى بداية الطريق من جديد.
وما بقي ليس مهما: ذات يوم مضيت مع عصام إلى السوق وقد اندفعت لأخطف حزمة من السلقي كانت أمام عجلات شاحنة
تتحرك ببطء .

وفي اللحظة الأخيرة زلقت وسقطت تحت الشاحنة . كان حظي جيداً فلم تمر العجلات فوق ساقي ، إنما توقفت بالضبط بعد
ملاستها . وعلى أية حال صحوت من إغمائي في المستشفى . وكان أول ما فعلته - كما لا شك تخمن - أن تفقدت الخمس
ليرات . إلا أنها لم تكن هناك .

اعتقد أن عصام هو الذي أخذها حين حملوه معي في السيارة إلى المستشفى .
ولكنه لم يقل وأنا لم أسأل . كنا نتبادل النظر فقط ونفهم . لا ، لم أكن غاضباً لأنه كان ملهياً وأنا أنزف دمي بأخذ الليرات
الخمس . كنت حزيناً فقط لأنني فقدتها .
وأنت لن تفهم . ذلك كان في زمن الاشتباك .

غسان كنفاني

أيار ١٩٦٧

**THE ANNEX COMPOUND IN ARABIC
A COMPARATIVE STUDY IN THE LIGHT OF THE PRACTICAL
LINGUISTICS**

By

Aied "Abd Ar-Rahman Abd Ar-Raheem" Fayez Mahmoud

Supervisor

Dr. fawz nazzal

ABSTRACT

There is no doubt that the phenomenon of annexation has been clearly developed throughout the ages, as a result of some effective elements such as: the variety of the linguistic schools like the obstetric alternative and the constructive functional ones, and another element is the translation from the other languages; thereby, we have been reading or listening to new and additional expressions to Arabic language; this is the thing which made the normative linguists disapprove.

This study as a whole is comparative between Arabic and English languages, whereas the researcher has met with the types of addition in Arabic and the same in English for the purposes of teaching, translation and computerization.

This study has adopted the following approaches:

The Historical Approach: we should be back with the phenomenon of annexation to the old ages to discover the approaches of the ascendant scholars in studying this phenomenon.

The Inductive Analytical Approach: the researcher has examined some indicative samples from the Holy Koran and poetry, and he has picked a translated literary work by a contemporary author; then he has compared the annexation in Arabic with the same in English quite as it was translated, and we have found the difference between both languages.

This study has consisted of three core points: the first chapter has discussed the concept of annexation in the Arabic linguistic heritage, and it has also dealt with the annexation in detail for the ascendant linguists; this chapter has consisted of five surveys:

1. annexation for Sebaweh.
2. annexation for Al-Mabrad.
3. annexation for Ibn Serage.
4. annexation in the explanation of Kafeya Ibn Al-Hajeb.

This chapter has been concluded with a survey under the title of "summary of studying annexation in the recent ages for As-Sheik Mustafa Al-Ghalayeni.

As for the second chapter, it has entitled as "annexation in the modern studies; it has consisted of four surveys.

1. the first survey has studied the annexation as made by Dr. Mohammad Fateeh.
2. the second survey has discussed the annexation for Dr. Abdel Qader Al-Fasi Al-Mohri.
3. the third survey has been under the title of "the annex compound within the frame of the definite and indefinite systems" for both (Gracia Gabocian) and Mohammad Saleh Al-Kacho.
4. this chapter has been concluded with Dr. Nehad Al-Mousa's research which has been entitled as (aspects of development in annexation).

As for the third chapter, it was the inductive and practical side of annexation, and it has included the following surveys:

1. the combination in Arabic.
2. the combination to annexation in Arabic.
3. the annex compound in the simple and broadened Arabic.
4. the types of annex compound according to the kind of the head.
5. the annex compound in context.